जहण्णेण एगसमयमुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो, तत्थ असंखेज्जभागवड्ढि मोत्तूण अण्णवड्ढीणमभावादो ।

संपहि जवमज्झादो उवरिमचदुसमयपाओग्गजोगट्ठाणेसु परिणममाणस्स असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढीओ चेव होंति । कधमेदं णव्वदे ? सव्वजीवसमासाणं जहण्णपरिणामजोगट्ठाणप्पहुडि जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणेत्ति एदाणि जोगट्ठाणाणि अस्सिदूण उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगसुत्तम्मि जवमज्झादो हेट्ठिम-उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणाणि सरिसाणि त्ति णिद्दिट्ठत्तादो । जोगट्ठाणे च हेट्ठिमसव्वद्धाणादो सादिरेयमद्धाणं गंतूण उवरिमदुगुणवड्ढी उप्पज्जदि । एवं सदि हेट्ठोवरिमपंचसमयादिजोग✪ट्ठाणाणि पढमगुणहाणिमेत्ताणि जदि होंति तो उवरिमचदुसमइयाणं चरिमसमए दुगुणवड्ढी समुप्पज्जेज्ज ♣ । ण च एवं, तहाविहोवदेसाभावादो । पुणो केरिसो उवदेसो त्ति पुच्छिदे उच्चदे– उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणादो हेट्ठा असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिय दुगुणवड्ढी होदि त्ति उवरिमचदुसमयपाओग्गेसु दो चेव वड्ढीओ होंति त्ति एसो पवाइज्जंत♠उवएसो । पवाइज्जंत–

परिवर्तनका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, वहां असंख्यातभागवृद्धिको छोडकर दूसरी वृद्धियोंका अभाव है ।

अब यवमध्यसे ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें परिणमन करनेवालेके असंख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागवृद्धि ही होती है ।

शंका–– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान – सब जीवसमासोंके जघन्य परिणामयोगको आदि लेकर अपने अपने उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान तक इन योगस्थानोंका आश्रय करके आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसूत्रमें ' यवमध्यसे नीचेके और ऊपरके चार समय योग योगस्थान सदृश हैं ' ऐसा निर्देश किया गया है । और योगस्थानमें अधस्तन समस्त अध्वानसे साधिक अध्वान जाकर उपरिम दुगुणवृद्धि उत्पन्न होती है । ऐसा होनेपर अधस्तन व उपरिम पंचसामयिक आदि योगस्थान यदि प्रथम गुणहानि मात्र होते हैं तो ऊपरके चतुःसामयिक योगस्थानोंके अन्तिम समयमें दुगुणवृद्धि उत्पन्न हो सकती है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा उपदेश नहीं है । तो फिर कैसा उपदेश है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे नीचे असंख्यातवें भाग मात्र उतर कर दुगुणवृद्धि होती है । अत एव ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृद्धियां होती हैं, ऐसा परम्पराप्राप्त उपदेश है ।

✪ मप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' पंचसमयाओजोग- ' इति पाठः । ♣ अ-आ-काप्रतिषु ' समप्पेज्ज ' मप्रतौ ' समुप्पेज्ज ' इति पाठः । ♠ अ-आ-काप्रतिषु ' पवाइज्जंति ' इति पाठः ।

उवएसो त्ति कुदो णव्वदे ? पवाइज्जंतउवएसेण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एक्कारस समया। अण्णदरेण उवएसेण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पण्णारस समया त्ति पदेसबंधसुत्तादो त्ति। तेण णव्वदि[1] जहा उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणेसु दो चेव वड्ढीओ, संखेज्जगुणवड्ढी णत्थि त्ति।

संपहि एदेणेव सुत्तेण सूचिदवड्ढिकालाणमप्पाबहुगं वुच्चदे। तं जहा—सव्वत्थोवो असंखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो। संखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो ? असंखेज्जभागवड्ढि (हाणि) विसयादो संखेज्जभागवड्ढि हाणिविसयस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो त्ति। विसयगुणगाराणुसारी कालगुणगारो किण्ण वुत्तो ? ण, परियट्टणभेदेण कालस्स असंखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो। संखेज्जगुणवड्ढिसंखेज्जगुणहाणीणं[2] कालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो ? संखेज्जभागवड्ढि-हाणिविसयादो संखेज्जगुणवड्ढि-हाणीणं विसयस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए

शंका— यह परम्पराप्राप्त उपदेश है, ऐसा कहांसे जाना जागा है ?

समाधान— परम्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे ग्यारह समय हैं। अन्यतर उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पन्द्रह समय हैं, इस प्रदेशबन्धसूत्रसे वह जाना जाता है।

इसीसे जाना जाता है कि ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृद्धियां होती हैं, संख्यातगुणवृद्धि नहीं होती।

अब इसी सूत्रसे सूचित वृद्धिकालोंके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— असंख्यातभागवृद्धि और हानिका काल सबमें स्तोक है। उससे संख्यातभागवृद्धि और हानिका काल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, असंख्यातभागवृद्धि व हानिके विषयसे संख्यातभागवृद्धि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है।

शंका— विषयगुणकारके समान कालके गुणकारको क्यों नहीं कहा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, परिवर्तनके भेदसे कालके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है।

उससे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानिका काल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संख्यातभागवृद्धि और हानिके विषयसे संख्यातगुणवृद्धि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है। उससे असंख्यातगुणवृद्धि और हानिका काल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? गुण—

---

[1] अप्रतौ 'णव्वदे' इति पाठः। [2] ताप्रतौ 'विरोहाभावादो। संखेज्जगुणहाणीणं' इति पाठः।

असंखेज्जदिभागो । कुदो ? संखेज्जगुणवड्ढि-हाणिविसयादो असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणि-विसयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । वड्ढि- हाणिकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण? सेसवड्ढी-हाणिकालमेत्तेण । एवं वड्ढिपरूवणा समत्ता ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाणि अट्ठसमइयाणि जोगट्ठाणाणि ॥

अप्पाबहुगपरूवणा किमट्ठमागदा ? अट्ठसमइयादिजोगट्ठाणाणं सेडीए असंखेज्जदिभागत्तणेण अवगदपमाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठं । सव्वत्थोवाणि✡ त्ति भणिदे उवरि भण्णमाणजोग✱ट्ठाणेहिंतो थोवाणि त्ति भणिदं होदि ।

दोसु वि पासेसु सत्तसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगपदेसेसु सव्वत्थ एसो चेव गुणगारो वत्तव्वो ।

कार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संख्यातगुणवृद्धि और हानिके विषयसे असंख्यातगुणवृद्धि और हानिका विषय असंख्यातगुणा पाया जाता है । वृद्धि और हानिका काल उससे विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है ? वह शेष वृद्धियों और हानियोंके काल मात्र विशेषसे अधिक है । इस प्रकार वृद्धिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्वके अनुसार आठ समय योग्य योगस्थान सबमें स्तोक हैं ॥ २०६ ॥

शंका— अल्पबहुत्वप्ररूपणा किसलिये प्राप्त हुई है ?

समाधान— श्रेणिके असंख्यातवें भाग स्वरूपसे जिनका प्रमाण ज्ञात हो चुका है उन अष्टसामयिक आदि योगस्थानोंका अल्पबहुत्व बतलानेके लिये अल्पबहुत्वप्ररूपणा प्राप्त हुई है ।

'सबमें स्तोक हैं' ऐसा कहनेपर आगे कहे जानेवाले योगस्थानोंसे स्तोक हैं, यह अभिप्राय ग्रहण किया गया है ।

दोनों ही पार्श्वभागोंमें सात समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वप्रदेशोंमें सर्वत्र यही गुणकार कहना चाहिये ।

✡ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा' इति पाठः ।　　✱ अ-आ-काप्रतिषु 'भण्णमाणओजोग-', ताप्रतौ 'भण्णमाण (ओ) जोग' इति पाठः ।

दोसु वि पासेसु छसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०८ ॥

दोसु वि पासेसु पंचसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०९ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

दोसु वि पासेसु चदुसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २१० ॥

उवरि तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि[*] । २११ ।

एत्थ उवरि त्ति णिद्देसो किमट्ठं कदो । उवरि भण्णमाणतिसमइय-बिसमइय-जोगट्ठाणाणि[@] जवमज्झादो उवरि चेव होंति, हेट्ठा ण होंति त्ति जाणावणट्ठं ।

बिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जाणि ॥ २१२ ॥

दोनों ही पार्श्वभागोंमें छह समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०८ ॥

दोनों ही पार्श्वभागोंमें पांच समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०९ ॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

दोनों ही पार्श्वभागोंमें चार समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २१० ॥

उनसे तीन समय योग्य उपरिम योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

शंका—यहां 'उपरि' शब्दका निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान—आगे कहे जानेवाले तीन समय और दो समय योग्य योगस्थान यव-मध्यसे ऊपर ही होते हैं नीचे नहीं होते; इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें 'उवरि' शब्दका निर्देश किया है ।

उनसे दो समय योग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २१२ ॥

---

[*] अ-आ-काप्रतिषु 'असंखेज्जगुणाणि' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते । [@] मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ 'तिस-मइयजोगट्ठाणा', आ-ताप्रत्योः 'तिसमइयजोगट्ठाणाणि', काप्रतौ 'तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि' इति पाठः ।

सुगमं । एवमप्पाबहुगपरूवणा समत्ता ।

जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि। णवरि पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ॥ २१३ ॥

दसहि अणुयोगद्दारेहि✲ जोगट्ठाणपरूवणाए परूविदाए किमट्ठमिदं सुत्तमागदं ? वुच्चदे – एदाणि सवित्थरेण परूविदजोगट्ठाणाणि चेव पदेसबंधकारणाणि ण अण्णाणि त्ति जाणाविय गुणिदकम्मंसिओ उक्कस्सजोगेसु चेव, खविदकम्मंसिओ जहण्णजोगेसु चेव हिंडाविदो। तस्स सफलत्तपरूवणदुवारेण बंधमस्सिदूण अजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वाणं ट्ठाणपरूवणट्ठमागदा । एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव जोगट्ठाणाणं सव्वेसिं पि रचणा कायव्वा । एवं कादूण एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा – जाणि चेव जोगट्ठाणाणि त्ति भणिदे जत्तियाणि जोगट्ठाणाणि त्ति वुत्तं होदि । ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति भणिदे तत्तियाणि चेव पदेसबंध-ट्ठाणाणि त्ति घेत्तव्वं । तं जहा -- जहण्णजोगेण अट्ठं बंधंतस्स तमेगं णाणा-

---

यह सूत्र सुगम है । इस प्रकार अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई ।

जो योगस्थान हैं वे ही प्रदेशबन्धस्थान हैं। विशेष इतना है कि प्रदेशबन्ध-स्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं ।। २१३ ।।

शंका–- दस अनुयोगद्वारोंसे योगस्थान प्ररूपणाके कर चुकनेपर फिर यह सूत्र किसलिये आया है ?

समाधान–- इस शंकाका उत्तर कहते हैं। विस्तारसे कहे गये ये योगस्थान ही प्रदेशबन्धके कारण हैं, अन्य नहीं हैं, ऐसा जतलाकर गुणितकर्मांशिकको उत्कृष्ट योगोंमें ही और क्षपितकर्मांशिकको जघन्य योगोंमें ही जो घुमाया है उसकी सफलताकी प्ररूपणा द्वारा बन्धका आश्रय करके अजघन्य-अनुत्कृष्ट द्रव्योंके स्थानोंकी प्ररूपणाके लिये उक्त सूत्र प्राप्त हुआ है।

इस सूत्रका अर्थ कहते समय प्रथमतः सभी योगस्थानोंकी रचना करना चाहिये। ऐसा करके इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— 'जाणि चेव जोगट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर 'जितने योगस्थान हैं' ऐसा उसका अर्थ होता है। 'ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर 'उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं' यह अर्थ ग्रहण करना चाहिये । यथा— जघन्य योगसे आठ कर्मोंको बांधनेवालेके वह

✲ अ-आ-काप्रतिषु 'अणियोगद्दाराहि' इति पाठः ।

वरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणं होदि । पुणो पक्खेवुत्तरजोगट्ठाणेण बिदिएण बंधमाणस्स बिदियं पदेसबंधट्ठाणं होदि । एदेण कमेण णेयव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । एवं णीदे जोगट्ठाणमेत्ताणि चेव णाणावरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि हवंति । तदो जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति सिद्धं । एवमाउअवज्जाणं सव्वकम्माणं वत्तव्वं । णवरि आउअस्स उववाद-एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि मोत्तूण सेसपरिणामजोगट्ठाणमेत्ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि वत्तव्वाणि ।

'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' त्ति एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— एत्थ ताव संदिट्ठीए जहण्णजोगदव्वमट्ठसट्ठि-सदमेत्तं होदि । १६८ । । सव्वजोगट्ठाणाणं पमाणं संदिट्ठीए छत्तीसुत्तरतिसदमेत्तं होदि । ३३६ । । पुव्वमेत्तियमेत्ताणि पदेसबंधट्ठाणाणि णाणावरणीएण लद्धाणि ।

संपहि जहा एदेहिंतो विसेसाहियाणि णाणावरणीयपदेसबंधट्ठाणाणि होंति तहा परूवेमो- जहण्णजोगेण अट्ठ पयडीओ बंधमाणस्स णाणावरणभंगो । संदिट्ठीए एक्कवीस । २१ । सत्त बंधमाणस्स णाणावरणभंगो✱ । चउवीस । २४ । । संपहि एत्थ दोण्हं दव्वाणं सरिसत्तं णत्थि । पुणो कधं होदि त्ति भणिदे जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तमभागब्भहियजोगट्ठाणेण

ज्ञानावरणीयका एक प्रदेशबन्धस्थान होता है । पश्चात् प्रक्षेप अधिक द्वितीय योगस्थानसे बांधनेवालेके द्वितीय प्रदेशबन्धस्थान होता है । इस क्रमसे उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार ले जानेपर योगस्थानोंके बराबर ही ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं । अत एव जितने ही योगस्थान हैं उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं, यह सिद्ध है । इसी प्रकार आयुको छोडकर सब कर्मोंके कहना चाहिये । विशेषता यह है कि आयु कर्मके उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगस्थानोंको छोडकर शेष परिणामयोगस्थानोंके बराबर ही प्रदेशबन्धस्थानोंको कहना चाहिये ।

'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' इस सूत्रांशका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— यहां संदृष्टिमें जघन्य योगके द्रव्यका प्रमाण एक सौ अडसठ है (१६८) । सब योगस्थानोंका प्रमाण संदृष्टिमें तीन सौ छत्तीस (३३६) है । पहिले ज्ञानावरणीयके द्वारा इतने मात्र प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त किये गये हैं ।

अब जिस प्रकार इससे विशेष अधिक ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान होते हैं उसे बतलाते हैं— जघन्य योगसे आठ प्रकृतियोंको बांधनेवालेकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । संदृष्टिमें इनके लिये इक्कीस (२१) अंक हैं । सात प्रकृतियोंको बांधनेवालेकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । इसके लिये संदृष्टिमें चौबीस (२४) अंक हैं । अब यहां दोनों द्रव्योंके सदृशता नहीं है । फिर कैसे सदृशता होती है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि जघन्य योगस्थानसे सातवें भाग अधिक योगस्थानके द्वारा

✱ अ-आ-काप्रत्योः 'भागो' इति पाठः ।

अट्ठं बंधमाणस्स✪ णाणावरणदव्वं जहण्णजोगट्ठाणेण सत्तं बंधमाणस्स णाणावरण✽ दव्वं च सरिसं होदि। एवं सरिसं कादूण अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण सत्तविहबंधगो जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण पुणो बंधावेदव्वो। एवं बंधे दोण्णं णाणावरणदव्वं सरिसं होदि। एत्थ सत्तसु जोगट्ठाणेसु छज्जोग- ट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लद्धाणि। सत्तमजोगट्ठाणं पुणरुत्तं, अट्ठविहबंधगदव्वेण समाणत्तादो। तेण तमवणेदव्वं। पुणो वि अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो, सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो⊙ सत्तविहबंधगो च सरिसा। एत्थ वि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति। सत्तमं पुणरुत्तं होदि। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण बंधमाणअट्ठविहबंधगणाणावरणदव्वेण तत्तो अट्ठमभागहीणजोग- ट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं जादेत्ति। एत्थ अपुणरुत्तपदेस- बंधट्ठाणेसु आणिज्जमाणेसु अट्ठमभागहीणसव्वजोगट्ठाणद्धाणमिच्छा कायव्वा। किमट्ठं ऊणं❋ कीरदे? एत्तियमेत्तजोगट्ठाणेहि◆ सत्तविहबंधगो उक्कस्सजोगट्ठाणं ण पत्तो त्ति।

आठको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य और जघन्य योगस्थानसे सात प्रकृतियोंको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार सदृश करके आठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे सप्तविध बन्धकको फिरसे बंधाना चाहिये। इस प्रकार बन्ध होनेपर दोनोंका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है। यहां सात योगस्थानोंमें छह योगस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं। सातवां योगस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, वह अष्टविध बन्धकके द्रव्यसे समान है। अत एव उसको कम करना चाहिये। फिरसे भी आठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला अष्टविध बन्धक, और सात प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला सप्तविध बन्धक, ये दोनों सदृश हैं। यहां यहां भी छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। सातवां स्थान पुनरुक्त है। इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले अष्टविध बन्धकके ज्ञानावरद्रव्यसे उसकी अपेक्षा आठवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान न हो जावे। यहां अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंको लाते समय आठवें भागसे रहित समस्त योगस्थानाध्वानको इच्छा राशि करना चाहिये।

शंका-- आठवें भागसे हीन किसलिये किया जाता है?

समाधान-- चूंकि इतने मात्र योगस्थानोंसे सप्तविध बन्धक उत्कृष्ट योगस्थानको नहीं प्राप्त हुआ है, अत एव उतना हीन किया गया है।

✪ आप्रतौ 'बंधमाणियस्स' इति पाठः। ✽ अ-आ-काप्रतिषु 'सत्तबंधमाणा-' इति पाठः। ⊙ अ-आ-का-प्रतिषु 'बंधमाणस्स', ताप्रतौ 'बंधमाणस्स (बंधमाणो)' इति पाठः। ❋ अ-आ-काप्रतिषु 'किमट्ठमाणं' इति पाठः। ◆ अप्रतौ 'एत्तियमेत्तंहि जोगट्ठाणेहि', आप्रतौ 'एत्तियमेत्तं जोगट्ठाणेहि' इति पाठः।

संपहि सत्तसु जोगट्ठाणेसु जदि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो अट्ठमभाग-हीणसव्वजोगट्ठाणाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्व-जोगट्ठाणाणं छ-अट्ठभागा लब्भंति $\frac{6}{8}$। पुणो सत्तविहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिमजोगट्ठाणेहि बंधाविदे सव्व-जोगट्ठाणमट्ठमभागमेत्तपदेसबंधगट्ठाणाणि णाणावरणीयस्स लब्भंति $\frac{1}{8}$। पुणो एदं पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्ते सत्त अट्ठभागा होंति $\frac{7}{8}$। संपहि एत्थ एत्तियाणि चेव णाणावरणपदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि।

संपहि सत्त-छव्विहबंधगे अस्सिदूण लब्भमाणट्ठाणाणं परूवणं कस्सामो । तं जहा – जहण्णजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगणाणावरणीयदव्वेण तत्तो छब्भागुत्तरजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं होदि । पुणो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगस्स णाणावरणीयदव्वेण छव्विहबंधगस्स छजोगट्ठाणाणि चडिदूण बंधमाणस्स णाणावरणदव्वं सरिसं होदि । एत्थ पंचपदेसबंधट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लब्भंति । छट्ठं पुणरुत्तं, तेण तमवणेदव्वं । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण सत्तबंधमाणणाणावरणीयदव्वेण उक्कस्सट्ठाणादो सत्तमभाग-हीणजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगस्स णाणावरणदव्वं सरिसं

अब सात योगस्थानोंमें यदि छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो आठवें भागसे रहित सब योगस्थानोंमें कितने अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके आठ भागोंमेंसे छह भाग ($\frac{6}{8}$) प्राप्त होते हैं। पुनः सप्तविध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानोंके द्वारा बंधानेपर सब योगस्थानोंके आठवें भाग मात्र ($\frac{1}{8}$) ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। फिर इसको पूर्वोक्त स्थानोंमें मिलानेपर सात बटे आठ भाग ($\frac{7}{8}$) होते हैं। अब यहां इतने ही ज्ञानावरणके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं।

अब सप्तविध और षड्विध बन्धकोंका आश्रय करके पाये जानेवाले स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है-- जघन्य योगस्थानसे बांधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा छठे भागसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। पुनः सात प्रक्षेपोंसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे षड्विध बन्धकके छह योगस्थान चढकर बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। यहां पांच प्रदेशबन्धस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं। छठा स्थान पुनरुक्त होता है, अतः उसको कम करना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उत्कृष्ट स्थानकी अपेक्षा सातवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले षड्विध बंधकके ज्ञानावरणद्रव्यके समान हो जाने तक ले जाना चाहिये।

जादं♠ त्ति । पुणो छव्विहबंधगट्ठिदजोगट्ठाणादो हेट्ठिमट्ठाणेसु उप्पण्णअपुणरुत्तट्ठाणाणि भणिस्सामो । तं जहा– छसु जोगट्ठाणेसु जदि पंचअपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो सत्तभागहीणजोगट्ठाणेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजोगठ्ठाणाणं पंच-सत्तभागा लब्भंति ५/७ । पुणो छव्विहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिमजोगट्ठाणे बंधाविदे सत्तमभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । पुणो एदाणि पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्तेसु छ-सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति ६/७ । अट्ठविह-छव्विहबंधगाणं सण्णिकासो णत्थि, पुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणुप्पत्तीदो । एत्थ पुणरुत्तकारणं जाणिदूण वत्तव्वं । १ | ७/८ | ६/७ एदेसिं समच्छेदं काढूण मेलाविदे एत्तियं होदि २ ४१/५६ । पुणो एदेसिमसंखेज्जदिभागमेत्ताणि आउअबंधस्स छव्विह बन्धस्स च अप्पाओग्गाणि उववाद-एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि एत्थ पक्खिविदव्वाणि । एवं पक्खित्ते जोगट्ठाणेहिंतो णाणावरणीयस्स पदेसबन्धट्ठाणाणि पयडिविसेसेण बिसेसाहियाणि त्ति

अब षड्विध बन्धकमें स्थित योगस्थानसे नीचेके स्थानमें उत्पन्न अपुनरुक्त स्थानोंको कहते हैं । यथा–– छह योगस्थानोंमें यदि पांच अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो सातवें भागसे हीन योगस्थानोंमें वे कितने पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके सात भागोंमेंसे पांच भाग प्राप्त होते हैं–– ५/७ । पश्चात् षड्विध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानके बंधानेपर सातवें भाग मात्र प्रदेशबन्धनस्थान पाये जाते हैं । अब इनको पूर्वके स्थानोंमें मिलानेपर सात भागोंमेंसे छह भाग प्रमाण प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं ५/७ + १/७ = ६/७ । अष्टविध और षड्विध बंधकोंमें समानता नहीं है, क्योंकि, वहां पुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंकी उत्पत्ति है । यहां पुनरुक्त होनेके कारणको जानकर कहना चाहिये । १ + ७/८ + ६/७ इनके समान छेद करके मिलानेपर इतना होता है ५६/५६ + ४९/५६ + ४८/५६ = १५३/५६ = २ ४१/५६ । अब इसमें इनके असंख्यातवें भाग मात्र आयुबंध और षड्विध बन्धके अयोग्य उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगस्थानोंको मिलाना चाहिये । इस प्रकार मिलानेपर योगस्थानोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्रकृति––विशेषसे विशेष अधिक हैं, यह सिद्ध होता है । इसी प्रकार शेष कर्मोंके भी सम्बन्धमें

♠ अ-आ-काप्रतिषु 'जादो' इति पाठः ।

सिद्धं । एवं सेसकम्माणं पि वत्तव्वं । णवरि आउअस्स पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तं णत्थि, अट्ठविहबंधगं मोत्तूण अण्णत्थ तस्स बंधाभावादो ।

मोहणीयस्स पुण छव्विहबंधगेण सण्णिकासो णत्थि त्ति सत्तट्ठविहबंधगाणं सण्णिकासे कीरमाणे अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि जोगट्ठाणेहिंतो विसेसाहियाणि | १७/८ | । सुत्ते पुण एसो विसेसो ण परूविदो । सव्वकम्माणं पि पयडिविसेसेण पदेस-बंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति वुत्तं कधं घडदे ? ण, संखेज्जगुणे वि विसे-साहियत्तं पडि विरोहाभावादो। ण आउएण विअहिचारो, पाधण्ण (?) फलावलंबणादो। अधवा एसत्थो (*) ण एदस्स सुत्तस्स होदि, सबाहत्तादो । कधं सबाहत्तं ? पय-डिविसेसो णाम पयडिसहाओ । ण तस्स पयडिसण्णिकासववएसो अत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो । पयडिसण्णिकासे कीरमाणे वि जोगट्ठाणेहिंतो ण सव्वकम्मपदेस-बंधट्ठाणाणं सादिरेयत्तमत्थि, मोहणीयं मोत्तूण अण्णत्थ तदणुवलंभादो । तदो एवमेदस्स अत्थो घेत्तव्वो – तम्हा जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव

कहना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रकृतिविशेषसे आयुके विशेष अधिकता नहीं है, क्योंकि, अष्टविध बन्धकको छोडकर अन्यत्र उसके बन्धका अभाव है ।

परन्तु मोहनीय कर्मके षड्विध बन्धकके साथ चूंकि समानता नहीं है, अतः सप्त-विध और अष्टविध बन्धकोंकी समानता करते समय अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान योगस्थानोंसे विशेष (१७/८) अधिक हैं । परन्तु सूत्रमें यह विशेषता नहीं बतलाई गई है ।

शंका— सब कर्मोंके भी प्रदेशबन्धस्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं, यह कथन कैसे घटित होता है ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, संख्यातगुणितमें भी विशेष अधिकताके प्रति कोई विरोध नहीं है । आयु कर्मसे व्यभिचार आता हो, सो भी बात नहीं है; क्योंकि, यहां प्रधान रूपसे फलका अवलम्बन किया है । अथवा यह अर्थ इस सूत्रका नहीं है, क्योंकि, वह बाधायुक्त है ।

शंका— वह बाधित कैसे है ?

समाधान— प्रकृतिविशेषका अर्थ प्रकृतिस्वभाव है । उसकी प्रकृतिसन्निकर्ष संज्ञा नहीं है, क्योंकि, दूसरी जगह वैसा पाया नहीं जाता । प्रकृतिसन्निकर्ष करनेपर भी योग-स्थानोंकी अपेक्षा सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंके साधिकता नहीं बनती, क्योंकि, मोहनीयको छोडकर अन्य कर्मोंमें वह पायी नहीं जाती ।

इस कारण इस सूत्रका अर्थ इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये— अत एव 'जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर योगस्थानोंसे

(?) अ-आ-काप्रतिषु 'पावण्ण' इति पाठः । (*) मप्रतिपाठोऽयम्, प्रतिषु 'एदस्सत्थो' इति पाठः ।

पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति वुत्ते जोगट्ठाणेहिंतो सव्वकम्मपदेसबंधट्ठाणाणमेगत्तं परूविदं, पदेसा बज्झंति एदेणेत्ति जोगट्ठाणस्सेव पदेसबंधट्ठाणववएसादो। बंधणं बंधो त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण, पदेसबंधट्ठाणाणमाणंतियत्तप्पसंगादो❀। जदि जोगादो पदेसबंधो होदि तो सव्वकम्माणं पदेसपिंडस्स समाणत्तं पावदि, एगकारणत्तादो। ण च एवं, पुव्विल्लप्पाबहुएण सह विरोहादो त्ति। एवं पच्चवट्ठिदसिस्सत्थमुत्तरसुत्तावयवो आगदो 'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' त्ति। पयडी णाम सहाओ, तस्स विसेसो भेदो, तेण पयडिविसेसेण कम्माणं पदेसबंधट्ठाणाणि समाणकारणत्ते वि पदेसेहि विसेसाहियाणि◆। तं जहा – एगजोगेणागदएगसमयपबद्धम्मि सव्वत्थोवो आउवभागो। णामा-गोदभागो तुल्लो विसेसाहिओ। णाणावरणीयदंसणावरणीय-अंतराइयाणं भागो तुल्लो विसेसाहियो। मोहणीयभागो विसेसाहिओ। वेयणीय-भागो विसेसाहिओ। सव्वत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण हेट्ठिम-हेट्ठिमभागे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं होदि। वुत्तं च –

सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंकी एकता बतलाई है, क्योंकि, प्रदेश जिसके द्वारा बंधते हैं वह प्रदेशबन्ध है, इस निरुक्तिके अनुसार योगस्थानोंकी ही प्रदेशबन्धस्थान संज्ञा प्राप्त है।

शंका-- 'बन्धणं बंधो' ऐसा भावसाधन रूप अर्थ क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, इस प्रकारसे प्रदेशबन्धस्थानोंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है।

यदि योगसे प्रदेशबन्ध होता है तो सब कर्मोंके प्रदेशसमूहके समानता प्राप्त होती है, क्योंकि उन सबके प्रदेशबन्धका एक ही कारण है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा होनेपर पूर्वोक्त अल्पबहुत्वके साथ विरोध आता है। इस प्रत्यवस्था युक्त शिष्यके लिये उक्त सूत्रके 'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' इस उत्तर अवयवका अवतार हुआ है। प्रकृतिका अर्थ स्वभाव है, उसके विशेषसे अभिप्राय भेदका है। उस प्रकृतिविशेषसे कर्मोंके प्रदेशबन्धस्थान एक कारणके होनेपर भी प्रदेशोंसे विशेष अधिक हैं। यथा– एक योगसे आये हुए एक समयप्रबद्धमें सबसे स्तोक भाग आयु कर्मका है। नाम व गोत्रका भाग तुल्य व आयुके भागसे विशेष अधिक है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तरायका भाग तुल्य होकर उससे विशेष अधिक है। उससे मोहनीयका भाग विशेष अधिक है। उससे वेदनीयका भाग विशेष अधिक है। सब जगह विशेषका प्रमाण आवलीके असंख्यातवें भागसे नीचे नीचेके भागको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र होता है। कहा भी है--

---

❀ का-ताप्रत्योः 'आणंतियप्पसंगादो' इति पाठः। ◆ अ-आ-प्रत्योः 'पदेसे वि विसेसाहियाणि', काप्रतौ 'पदेसे विसेसाहियाणि', ताप्रतौ 'पदेसेवि (हि)', मप्रतौ 'पदेसेहि वि विसेसाहियाणि' इति पाठः।

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो ।
आवरणमंतराए भागो अहिओ दु मोहे वि ॥ २८ ॥

सव्वुवरि सोहणीए⊗ भागो अहिओ दु कारणं किंतु ।
पयडिविसेसो कारण णो अण्णं तदणुवलंभादो✱ ॥ २९ ॥

एवं वेयणदव्वविहाणेत्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

आयुका भाग स्तोक है । उससे नाम और गोत्रका भाग विशेष अधिक होता हुआ परस्पर समान है । उससे ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका भाग अधिक है । उससे अधिक भाग मोहनीयका है । वेदनीयका भाग सबसे अधिक है । किन्तु इसका कारण प्रकृति-विशेष है, अन्य नहीं है; क्योंकि, वह पाया नहीं जाता ॥ २८–२९ ॥

इस प्रकार वेदनाद्रव्यविधान नामक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।
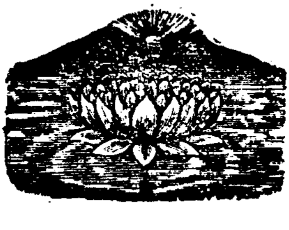
⊗ अ-आ-काप्रतिषु ' मोहणीए ', ताप्रतौ ' मोहणीए (वेयणीए) ' इति पाठः । ✱ आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥ सुह-दुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगो त्ति वेयणीयस्स । सव्वेहिंतो बहुगं दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ॥ गो. क. १९२-१९३ कमसो वुड्ढठिईणं भागो दलियस्स होइ सविसेसो । तइयस्स सव्वजेट्ठो तस्स फुडत्तं जओ णप्पे ॥ पं सं. १, ५७८.